

08/12/2021

आज गुरु श्री गोरक्षनाथ रक्त कोष में गुरु तेग बहादुर के बलिदान दिवस के अवसर पर एक वृहद रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया ।

इस अवसर पर उपस्थित चिकित्सालय के निदेशक मेजर जनरल अतुल बाजपाई जीने गुरु तेग बहादुर के जीवन के संबंध में बताया कि गुरु तेग बहादुर (ग्रेगोरी कैलेण्डर: 1 अप्रैल 1621 – 11 नवम्बर, 1675), (भारांग: 11 चैत्र 1543 - 20 कार्तिक 1597 ) सिखों के नवें गुरु थे जिन्होंने प्रथम गुरु नानक द्वारा बताए गये मार्ग का अनुसरण करते रहे। उनके द्वारा रचित 115 पद्य गुरु ग्रन्थ साहिब में सम्मिलित हैं। उन्होंने काश्मीरी पंडितों तथा अन्य हिन्दुओं को बलपूर्वक मुसलमान बनाने का विरोध किया। इस्लाम स्वीकार न करने के कारण 1675 में मुगल शासक औरंगज़ेब ने उन्हें इस्लाम स्वीकार करने को कहा कि पर गुरु साहब ने कहा सीस कटा सकते है केश नहीं। फिर उसने गुरुजी का सबके सामने उनका सिर कटवा दिया। गुरुद्वारा शीश गंज साहिब तथा गुरुद्वारा रकाब गंज साहिब उन स्थानों का स्मरण दिलाते हैं जहाँ गुरुजी की हत्या की गयी तथा जहाँ उनका अन्तिम संस्कार किया गया। विश्व इतिहास में धर्म एवं मानवीय मूल्यों, आदर्शों एवं सिद्धान्त की रक्षा के लिए प्राणों की आहुति देने वालों में गुरु तेग बहादुर साहब का स्थान अद्वितीय है।

इस अवसर पर उपस्थित ब्लड बैंक प्रभारी डॉ अवधेश अग्रवाल जी ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए उन्होंने बताया कि इस महावाक्य के अनुसार गुरुजी का बलिदान न केवल धर्म पालन के लिए नहीं अपितु समस्त मानवीय सांस्कृतिक विरासत की खातिर बलिदान था। धर्म उनके लिए सांस्कृतिक मूल्यों और जीवन विधान का नाम था। इसलिए धर्म के सत्य शाश्वत मूल्यों के लिए उनका बलि चढ़ जाना वस्तुतः सांस्कृतिक विरासत और इच्छित जीवन विधान के पक्ष में एक परम साहसिक अभियान था।

आततायी शासक की धर्म विरोधी और वैचारिक स्वतन्त्रता का दमन करने वाली नीतियों के विरुद्ध गुरु तेग बहादुरजी का बलिदान एक अभूतपूर्व ऐतिहासिक घटना

थी। यह गुरुजी के निर्भय आचरण, धार्मिक अडिगता और नैतिक उदारता का उच्चतम उदाहरण था। गुरुजी मानवीय धर्म एवं वैचारिक स्वतन्त्रता के लिए अपनी महान शहादत देने वाले एक क्रान्तिकारी युग पुरुष थे।

11 नवम्बर, 1675 ई० (भारांग: 20 कार्तिक 1597 ) को दिल्ली के चांदनी चौक में काज़ी ने फ़तवा पढ़ा और जल्लाद जलालदीन ने तलवार से गुरु साहिब का शीश धड़ से अलग कर दिया। किन्तु गुरु तेग़ बहादुर ने अपने मुँह से सी' तक नहीं कहा। आपके अद्वितीय बलिदान के बारे में गुरु गोविन्द सिंह जी ने 'बिचित्र नाटक में लिखा है-

तिलक जंजू राखा प्रभ ताका॥ कीनो बडो कलू महि साका॥

साधन हेति इती जिनि करी॥ सीसु दीया परु सी न उचरी॥

धरम हेत साका जिनि कीआ॥ सीसु दीआ परु सिररु न दीआ॥

इस अवसर पर उपस्थित ब्लड बैंक अधिकारी डॉक्टर ममता जायसवाल जी ने रक्त दाताओं को आवश्यक जानकारियां एवं सावधानियों के बारे में विस्तार से समझाया उन्होंने बताया कि एक स्वस्थ व्यक्ति जिसका वजन 45 किलो से ऊपर, उम्र 18 से 65 वर्ष के बीच हो तो वह व्यक्ति रक्तदान कर सकता है रक्तदाता की जांच रक्तदान के पूर्व स्वतः ही ब्लड बैंक कर्मचारियों द्वारा किया जाता है।

इस रक्तदान शिविर में चिकित्सालय के मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डॉ सी एम सिन्हा जी ने अपने विचार प्रस्तुत किए उनके संबोधन से रक्त दाताओं में जागरूकता एवं उत्साह वर्धन हुआ।

इस अवसर पर कुल 25 रक्त दाताओं ने रक्तदान किया जैसे जसवीर सिंह, चंदन सिंह, राजू मद्धेशिया, पिंटू जायसवाल समेत नगर के अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने रक्तदान शिविर में भाग लिया तथा मानवता के परिचायक बने।

कार्यक्रम के अंत में अपर निदेशक डाक्टर कामेश्वर सिंह ने धर्म, मानवता एवं न्याय की रक्षा के लिए सर्वोच्च बलिदान देने वाले महान योद्धा, अद्भुत संगठनकर्ता सिख

पंथ के नौवें गुरु के त्याग बलिदान दिवस पर विनम्र श्रद्धांजलि एवं कोटि कोटि नमन किए तथा उपस्थित जनसमूह, रक्त दाताओं तथा रक्त कोष कर्मचारियों को अपने हृदय से आभार व्यक्त किए एवं धन्यवाद ज्ञापित किए।